

कविवर पंडित दानतरायजी कृत
सम्यक् रत्नत्रयधर्म पूजन

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



(दोहा)

चहुंगति फनि विषहरन मणि, दुखपावक जलधार ।
शिव-सुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक्-त्रयी निहार ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्करत्नत्रयधर्म !

अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्करत्नत्रयधर्म !

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः ।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्करत्नत्रयधर्म !

अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



अष्टक

(सोरठा)

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भज्जू ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

चन्दन केशर गारि, परिमल-महा-सुगन्ध-मय ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भज्जू ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

तन्दुल अमल चितार, वासमती-सुखदास के ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भज्जूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

महकैं फूल अपार, अलि गुंजैं ज्यों थुति करैं ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भज्जूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धयुत ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भज्जूं ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

दीप-रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भज्जूं ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय मोहान्धकार-
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

धूप सुवास विथार, चन्दन अगर कपूर की ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भज्जूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भज्जूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये ।
जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजौं ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सम्यक् दरशन ज्ञान व्रत, शिव मग-तीनों मयी ।
पार उतारन यान 'द्यानत' पूजों व्रत सहित ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सम्यग्दर्शन पूजन

(दोहा)

सिद्ध अष्ट गुणमय प्रकट, मुक्त-जीव-सोपान ।
ज्ञान चरित जिहँ बिन अफल, सम्यक्दर्श प्रधान ॥



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन !

अत्र अवतर अवतर, संवौषट् इति आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन !

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शन !

अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम् ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



जल केसर घनसार, ताप हरै सीतल करै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय भवातापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



दीप-ज्योति तमहार, घट-पट परकाशै महा ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिवफल करै ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यग्दर्शन सार, आठ अंग पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

जयमाला

(दोहा)

आप आप निहचै लखै, तत्त्व-प्रीति व्यवहार ।
रहित दोष पच्चीस हैं, सहित अष्ट गुन सार ॥



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(चौपाई)

सम्यक् दरशन-रतन गहीजे,
जिन-वच में सन्देह न कीजै।
इह- भव-विभव-चाह दुःखदानी,
पर- भव भोग चाहै मत प्रानी॥



(गीता)

प्रानी गिलान न करि अशुचि लखि, धरमगुरु प्रभु परखिये ।
पर-दोष ढकिये धरम डिगते को, सुथिर कर हरखिये ॥
चहुँ संघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना ।
गुन आठसों गुन आठ लहिकैं, इहाँ फेर न आवना ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहितसम्यग्दर्शनाय
जयमालापूरार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

सम्यग्ज्ञान पूजन

(दोहा)

पंच भेद जाके प्रकट, ज्ञेय-प्रकाशन भान ।
मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यग्ज्ञान ॥



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान !

अत्र अवतर अवतर, संवौषट्, इति आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान !

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान !

अत्र मम सन्निहितो, भव-भव वषट्,
इति सन्निधिकरणम् ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय भवातापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

दीप-जोति तम-हार, घट पट परकाशै महा ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर-शिवफल करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



जयमाला

(दोहा)

आप आप जानें नियत, ग्रन्थ-पठन व्यवहार ।
संशय-विभ्रम-मोह बिन, अष्ट अंग गुनकार ॥

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(चौपाई)

सम्यग्ज्ञान-रतन मन भाया,
आगम तीजा नैन बताया ।
अच्छर शुद्ध अर्थ पहचानो,
अक्षर अरथ उभय संग जानो ॥



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(गीता)

जानो सुकाल-पठन जिनागम, नाम गुरु न छिपाइए ।
तप रीति गहि बहु मौन देकैं, विनय-गुन चित लाइए ॥
ये आठ भेद करम उछेदक, ज्ञान-दर्पन देखना ।
इस ज्ञान ही सों भरत सीझा, और सब पट पेखना ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
जयमालापूरुर्णार्घ्यं निवपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



सम्यक्चारित्र पूजन

(दोहा)

विषय रोग औषध महा, दव कषाय जलधार ।
तीर्थकर जाको धरै, सम्यक्चारित सार ॥

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध-सम्यक्चारित्र !

अत्र अवतर अवतर संवौषट्, इति आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध-सम्यक्चारित्र !

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः, इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविध-सम्यक्चारित्र !

अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्, इति सन्निधिकरणम् ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय अक्षयपद प्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

नेवज विविध प्रकार, छुधा हरै थिरता करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरहविध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

दीप-जोति तम-हार, घट-पट परकाशै महा ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

धूप घ्रान-सुखकार, रोग विघन जड़ता हरै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

श्रीफल आदि विथार, निहचै सुर शिवफल करै ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

जल गंधाक्षत चारु, दीप धूप फल फूल चरु ।
सम्यक्चारित सार, तेरह विध पूजौं सदा ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

जयमाला

(दोहा)

आप आप थिर नियत नय, तप संयम व्यवहार ।
स्व-पर-दया दोनों लिये, तेरह विध दुखहार ॥



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(चौपाई)

सम्यक्चारित्र-रतन सँभालौ,
पाँच पाप तजि के व्रत पालौ ।
पंच समिति त्रय गुप्ति गहीजै,
नर-भव सफल करहु तन छीजै ॥



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(गीता)

छीजै सदा तन को जतन यह, एक संजम पालिए ।
बहु रुल्यो नरक-निगोदमाहीं, विषय-कषायनि टालिए ॥
शुभ-करम जोग सुघाट आया, पार हो दिन जात है ।
'द्यानत' धरम की नाव बैठो, शिव-पुरी कुशलात है ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय
जयमालापूर्णाघ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सम्यग्दर्शन ज्ञान व्रत, इन बिन मुक्ति न होय ।
अन्ध पंगु अरु आलसी, जुदे जलैं दव लोय ॥

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



(चौपाई)

जापै ध्यान सुथिर बन आवै, ताके करमबन्ध कट जावै ।
तासों शिव-तिय प्रीति बढावै, जो सम्यक्करत्नत्रय ध्यावै ॥
ताकौ चहुँगति के दुःख नाहीं, सो न परे भवसागर माहीं ।
जनम-जरा-मृत दोष मिटावै, जो सम्यक्करत्नत्रय ध्यावै ॥

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



(चौपाई)

सोई दशलच्छन को साधै, सो सोलहकारण आराधै ।
सो परमात्मपद उपजावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै ॥
सोई शक्र-चक्रिपद लेई, तीनलोक के सुख विलसेई ।
सो रागादिक भाव बहावै, जो सम्यक् रत्नत्रय ध्यावै ॥

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग



(चौपाई)

सोई लोकालोक निहारे, परमानन्ददशा विसतारे ।
आप तिरै और न तिरवावै, जो सम्यक्स्त्रय ध्यावै ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्राय
समुच्चयजयमाला अनर्घ्यपदप्राप्तये
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्शनज्ञानचारित्रैः
साध्यसिद्धिर्न चान्यथा

सम्यक्चारित्र 13 अंग

सम्यग्ज्ञान 8 अंग

सम्यग्दर्शन 8 अंग

(दोहा)

एक स्वरूपप्रकाश निज, वचन कह्यो नहिं जाय ।
तीन भेद व्योहार सब, 'द्यानत' को सुखदाय ॥

ॐ पुष्पांजलिं क्षिपेत्

